लाहौल की स्वांगला – बोली का भाषिक अध्ययन

डॉ0 अनिता कुमारी
सहायक प्राध्यापक
राजकीय महाविद्यालय कुकुमसेरी
जिला लाहौल स्पिति (हि0 प्र0)

इस लघु शोध– प्रबन्ध में स्वांगला–समुदाय की विभाषा के लिए 'स्वांगला–बोली' शब्द का प्रयोग किया गया है। आधुनिक लाहौल में मगोल एवं आर्य प्रजाति के लोगों तथा बौद्ध एवं हिन्दु धर्म के अनुयायियों की सत्ता पायी जाती है।[1] स्वांगला (सुआंग) अर्थात आर्य नरल के रंग–रूप वाले लोग ब्राहम्ण व हरिजनों की जातियों में से हैं। पटटन घाटी में आर्य समाज से प्रभावित हिन्दु धर्मानुयायियों के लिये स्वांगला शब्द का प्रयोग होने लगा।

भाषा में परिवर्तन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। चाहे भाषा हो या बोली, जिसमें भी शब्द, अर्थ व ध्वनियों का विन्यास है, वहां परिवर्तन स्वाभाविक ही हो जाता है। अन्य भाषाओं के तुल्य ही स्वांगला–बोली में भी ध्वनि परिवर्तन हुआ है। भाषा या बोली में परिवर्तन के कारणवश ध्वनियों में विकार आने से होता है। कुछ परिस्थितियों में परिवर्तन भौगोलिक परिस्थिति, अनुकरण की अपूर्णता, प्रयत्नलाघव, सामाजिक एवं राजनैतिक तथा धार्मिक कारणों से हुआ करता है। लाहौल के अन्तर्गत पटटन घाटी में निवास करने वाले स्वांगला का सामान्य परिचय अधोनिर्दिष्ट है–

अ स्वांगला का सामान्य परिचय

स्वांगला ब्राहम्ण वर्ग से सम्बन्ध रखते हैं। इसका मूल स्थान पटटन घाटी में चन्द्रा और भागा नदियों के संगम स्थान तांदी से चन्द्रभागा नदी के दोनों ओर पटटन क्षेत्र है। यद्यपि लाहौल बौद्ध बाहुल्य प्रदेश है, तथापि पटटन घाटी में स्वांगला की अनुमानित

.....

1 प्रो0 डी0 डी0 शर्मा : लाहौल की धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पृ0 18–20

जनसंख्या साठ–सतर के लगभग है परन्तु स्वांगला का अपना कोई विशिष्ट क्षेत्र नहीं है। एक ही गॉव में स्वांगला, बौद्ध, गरू, लुहार तथा चण् आदि मिश्रित वर्ग के लोग रहते हैं। स्वांगला और बौद्ध जाति जब आपस में शादी करते हैं, तो उनके च्चों की जाति को गरू कहते हैं। तान्दी से लेकर उदयपुर से 24 किलोमीटर दूर तिन्दी तक कुछ ही गॉवों को छोड़कर अन्य समस्त गॉवों में स्वांगला पाये जाते हैं।

उत्सवों और त्यौंहारों में नाच–गाने, बर्फ में पसन्द करते हैं। सर्दियों में बड़े–बूढ़े लोग परम्परागत लोककथाएं, पंहुच से बाहर इन ऊॅचे पर्वत– शिखरों में साहसिक कार्यों की गाथाएं दोहराते हैं। ईश्वर, देवताओं और दुरात्माओं की कथाएं भी सुनते है। धर्म में भी लोगों की आस्था है। पटटन वादी में हिन्दु धर्म का प्रचलन है। जात–पात के बंधन सामाजिक रोक–टोक देश के अन्य भागों की तरह स्वांगला–समुदाय में भी विद्यमान है।

यद्यपि सम्पूर्ण स्वांगला– समुदाय को 'स्वॉग' (स्वांगला) शब्द से अभिहित किया जाता है, तथापि स्वांगला समुदाय में भी जो पौरोहित्य कर्म से जुड़े हुए हैं उनके समुदाय को उच्चतम वर्ग मानकर उन्हें भाट् या भड़ कहकर पुकारते हैं। भाट और स्वांगला दोनों ब्राहम्ण वर्ग में आते हैं।

ये वर्ग शैव मताबलम्बी हैं तथा हिन्दु देवी–देवताओं में आस्था रखते हैं। परन्तु विभिन्न संस्कारों व सभ्यताओं के एक स्थान पर रहते हुए भी स्वांगला– समुदाय ने अपने संस्कार को नही छोड़ा और अपनी सभ्यता व जाति संस्कारों के अनुसार अपने नियमों पर चले हुए है। ये न केवल व्यावसायिक स्तर पर ही बल्कि सामाजिक सम्बन्धों में भी परस्पर बंधे हुए हैं। इस समुदाय की एक मुख्य विशेषता यह है कि हर वग या जाति नियमें के आधार पर एक–दूसरे वर्ग को मान्यता व सम्मान देता है।

पटटन घाटी के स्वांगला से भिन्न वर्ग में बौद्ध, लुहार औश्र चण् आदि जातियॉ सम्मिलित हैं। लुहारों तथा चाह्णों ने स्वांगला व बौद्ध समाज में एक अच्छा स्तर पाया है। त्यौहारों मेलों व अन्य धार्मिक उत्सवों में चाह्ण लोग कुशल संगीतज्ञ के रूप में अपनी भूमिका निभाते हैं।

आ पटटन घाटी की बोलियों में स्वांगला का स्थान

पटटन घाटी में बोली व उप–बोली सहित चार भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। जिन्हें व्यावसायिक स्तर के आधार पर बोलियों को भी निम्नलिखित चार भागों के विभक्त किया गया है–

1. चण् बोली
2. लुहारी बोली
3. बौद्ध बोली
4. स्वांगला– बोली

यद्यपि उक्त बोलियों का विस्तारपूर्वक विवरण द्वितीय अध्याय में दिया गया है परन्तु इन बोलियों का मुख्य क्षेत्र पटटन घाटी होने के कारण इनकी मुख्य बोली तो पटटनी बोली ही है। चण् बोली तथा लुहारी बोली प्रायः अपने व्यवसाय या वर्ग तक ही सीमित है। जब ये दोनों समुदाय के लोग पटटन घाटी के दूसरे वर्ग (बौद्ध तथा स्वांगला) के साथ आचार–व्यवहार करते हैं, तो अपने बोली को त्याग कर उनके साथ पटटनी बोली का प्रयोग करते हैं।

'पटटनी' एक अत्यन्त ही रोचक बोली है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि लाहौल की जनसंख्या के आधे से अधिक लोग इसी बोली को बोलते हैं। बहुसंख्यक बोली होने के कारण चन्द्रा घाटी और भागा घाटी के लोग भी इसे थोड़भ् बहुत सीख जाते हैं। यही कारण है कि लाहौल के विभिन्न बोली बोलने वाले लोगों की आपसी बातचीत और विचारों की अभिव्यक्ति का एक मात्र माध्यम 'पटटनी' बोली ही है।

'पटटनी' अपने आप में दो बोलियों से मिलकर बनी है और वे इस प्रकार से हैं–

(क) बौद्ध बोली तथा
(ख) स्वांगला– बोली

(क) बौद्ध बोली

बौद्ध धर्म– मतानुयायियों की बोली को बौद्ध बोली कहते हैं। धार्मिक तथा सांस्कृतिक परम्पराओं के आधार पर प्रायः स्वांगला से भिन्न वर्ग वाले बौद्ध धर्म को मानने वाले लोगों को बौद्ध कहा गया है। बौद्ध – समुदाय द्वारा बोली जाने वाली बोली को बौद्ध बोली कहते है। पटटनी आबादी पर दो प्रकार की सांस्कृतिक परम्पराओं का प्रभाव रहा है। बोली एक होने पर भी प्रायोगिक विभिन्नता के कारण इस बोली को बोलने वाले प्रायः बौद्ध– धर्मावलम्बी होते हैं। इन्हीं संस्कारों के आधार पर बौद्ध स्वांगला से भिन्न हैं।

(ख) स्वांगला– बोली

हिन्दु – मतानुयायियों की बोली[1] को स्वांगला बोली कहते है। पटटन घाटी में रहने वाले साठ–सत्त्र प्रतिशत स्वांगला– भाषी हैं। चन्द्रा और भागा नदियों का संगम स्थान तान्दी से लेकर तिन्दी तक चन्द्रभागा की इस घाटी को पटटन घाटी कहा जाता है और इस घाटी की मुख्य बोली 'पटटनी' कहा जाता है। थिरोट से लेकर उदयपुर तक का इलाका 1975 से पहले 'चम्बा–लाहुल' के नाम से जाना जाता था क्योंकि यह इलाका जिला चम्बा का एक हिस्सा था। उस वर्ष चम्बा जिला के चार पटवार सर्कलों को जिला लाहौल–स्पिति में मिला दिया गया और वे चार पटवार सर्कल हैं (1) त्रिलोकीनाथ (2) उदयपुर (3) मयाढ़ नाला तथा (4) तिन्दी।

बोलियों के हिसाब से भूतपूर्व 'चम्बा–लाहुल' को हम 'पटटनी' बोली के अन्तर्गत रख सकते हैं, क्योंकि इस बोली की शब्दावली मुख्य पटटन घाटी की मुख्य बोली अर्थात 'पटटनी' जैसी ही है। अगर कोई अन्तर है तो वह है केवल सुरों और तालों की विभिन्नता।[1]

यह देखने में आता है कि पटटन –घाटी में रहने वाले लोगों को प्राकृतिक दृष्टि से दो भागों में निम्न प्रकार से विभक्त किया गया है–

1. पिलोपर तथा
2. रेउफर

तान्दी से लेकर थिरोट गॉ तक सभी वर्ग के लोगों को 'पिलोपर' कहा जाता है। इस इलाके के अन्तर्गत क्रमशः हिन्दु और बौद्ध मतानुयायी आतें हैं। इनके द्वारा बोली जाने वाली बोली का स्थानीय नाम 'पिलोपटु' बोली है। इस प्रकार पटटन–घाटी के दुसरे भाग में रहने वाले थिरोट से लेकर उदयपुर तक बोली जाने वाली बोली को रेउफर बोली से जाना जाता है। थिरोट से लेकर उदयपुर तक के सभी लोगों को रेउफर कहा जाता है। थिरोट से लेकर उदयपुर गॉव (भूतपूर्व चम्बा–लाहुल) तक के सभी लोग हिन्दु–मतानुयायी है। परन्तु फिर भी इनकी बोली और मुख्य बोली 'पटटनी' के अन्तर्गत बोली जाने वाली स्वांगला और बौद्ध बोली जिनको 'पिलापटु' बोली के अनतर्गत रखी गई है इन बोलियों में भी थोड़ी सी असमानता है।[2] इस बात को एक साधारण सा उदाहरण देकर समझाया जा सकता है। हिन्दी का एक शब्द है 'ऊपर । पटटनी बोली में एक नहीं बल्कि तीीन शब्द इसके लिये प्रयुक्त होते हैं और वे हैं –

(1) टोइज़ तथा (2) टोईच़ (पिलोपा लोगो द्वारा)

(3) टोठी (रेउपा लोगों द्वारा)

डॉ0 ग्रियर्सन ने 'लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' खण्ड तीन भाग में पटटन– घाटी की मुख्य बोली 'पटटनी' को मनचाती माना है 'मनचात' भी तिब्बती शब्द हैं। विभिन्न समीक्षकों ने मुख्य बोली 'पटटनी' को दो उपबोलियॉ बौद्ध तथा स्वांगला–बोली में विभक्त किया है। थिरोट से लेकर उदयपुर तक रेउफा बोली भी स्वांगला–बोली के अन्तर्गत आने के कारण पटटन– घाटी में बोली जाने वाली बोलियों में से स्वांगला–समुदाय द्वारा बोली जाने वाली स्वांगला– बोली बोलने वालों की संख्या अधिक है। उच्चरण के सौंकर्य की दृष्टि से स्वांगला–बोली में उन्हीं ध्वनियों का आधिक्य है जो सुगमता से उच्चरित हो सकती है।